प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 5 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

आज के भूमंडलीकरण व बाजारवाद के चलते हिंदी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विस्तार में नयी है। हिंदी प्रदेश से बाहर निकलते ही उसके स्वरूप व स्थिति में अंतर आ रहा है। हिंदी भाषा का साहित्यिक रूप कार्यालयों में वाणिज्य, वैज्ञानिक, बृहत्तर समाज तथा पत्रकारिता के रूप में अलग–अलग है, वह अलग शब्दावली से समृद्ध हो रही है। राजभाषा नियमों पर संविधान द्वारा दफ्तरों में चलाई जाने वाली हिंदी सर्वसाधारण जनता को मंजूर नहीं है। हिंदी भाषा को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

भारत एक बहुभाषी देश है। संपूर्ण देश में भाषा वैज्ञानिकों ने 1652 भाषाएँ तथा बोलियाँ बोली जाने की पुष्टि की है। हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं पर दृष्टि करें तो भारत के ही नहीं विश्व के परिदृश्य के संदर्भ में देखने पर यह तथ्य सामने आता है कि राष्ट्र और समाज के निर्माण में भाषा अहम भूमिका निभाती है। बहुभाषिकता और सांस्कृतिक विविधता ने भारत वर्ष को एक विशिष्ट साँचे में ढाल दिया है।

1. **बहुभाषी देश** से क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर : **बहुभाषी देश** से तात्पर्य है– जहाँ अनेक भाषाएँ बोलने वाले लोग रहते हैं।

2. दफ्तरों में हिंदी किसके द्वारा चलाई गई और यह किसको पसंद नहीं है? 2

उत्तर : राजभाषा नियमों पर संविधान द्वारा दफ्तरों में हिंदी चलाई गई परंतु सर्वसाधारण जनता को यह पसंद नहीं आई।

3. किसी भी राष्ट्र तथा समाज के संदर्भ में भाषा का क्या महत्व है? बताइए। 2

उत्तर : किसी भी राष्ट्र तथा समाज के निर्माण में वहाँ की भाषा प्रमुख भूमिका निभाने वाला तत्व है। अतः भाषा की एक अहम भूमिका होती है।

4. भारत के एक विशिष्ट साँचे में ढले होने का मुख्य कारण क्या है? बताइए। 2

उत्तर : बहुभाषिकता तथा सांस्कृतिक विविधता के कारण भारत एक विशिष्ट साँचे में ढल गया है। इसलिए बहुभाषिकता तथा सांस्कृतिक विविधता का विशिष्ट महत्व है।

5. भारत में कितनी भाषाएँ व बोलियाँ बोली जाती हैं? 1

उत्तर : भारत में 1652 भाषाएँ तथा बोलियाँ बोली जाती हैं।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : हिंदी भाषा का महत्व।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. खूब पढ़ाई करो वरना फेल हो जाओगे। रचना के आधार पर वाक्य–भेद लिखिए।

उत्तर : संयुक्त वाक्य।

2. कहानी मजेदार और दिलचस्प थी। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो कहानी मजेदार थी, वह दिलचस्प भी थी।

3. सूर्य के उगते ही पक्षी घोंसला छोड़ देते हैं। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : सूर्य उगता है और पक्षी घोंसला छोड़ देते हैं।

4. वह रोटी और दाल खाता है। (रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : सरल वाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. लड़की ने ठंडा पानी पिया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : लड़की द्वारा ठंडा पानी पिया गया।

2. बच्चा रातभर रोता रहा। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : बच्चे से रातभर रोया गया।

3. माँ द्वारा बाजार जाया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : माँ बाजार जाती है।

4. रमेश के द्वारा पत्र लिखा गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए।)

उत्तर : रमेश ने पत्र लिखा।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. जैसे ही मैं घर पहुँचा, बारिश होने लगी।

उत्तर : अकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य।

2. मौसी की मृत्यु का समाचार सुनकर अत्यंत दुख पहुँचा।

उत्तर : प्रविशेषण, **दुख** विशेषण की विशेषता प्रकट कर रहा है।

3. यह बालक पुरस्कार जीत सकता है।

उत्तर : संकेतवाचक विशेषण, अन्यपुरुष, एकवचन।

4. वह नित्य घूमने जाता है।

उत्तर : कालवाचक क्रियाविशेषण, **जाता है**, क्रिया के होने का समय बता रहा है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- $1 \times 4 = 4$

1. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।

प्रच्छन्न रोग है, प्रकट भोग,
संयोग मात्र भावी वियोग।
हाँ! लोभ मोह में लीन लोग,
भूलें हैं अपना अपरिणाम,
ओ क्षणभंगुर भव! राम-राम।

उत्तर : शांत रस।

2. मोरे घर आए राजा राम भरतार। इस काव्य-पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।

उत्तर : भक्ति रस।

3. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।

नभ ते झटपट बाज लखि,
भूल्यो सकल प्रपंच,
कंपित तन व्याकुल नयन,
लावक हिल्यो र रंच।

उत्तर : भयानक रस।

4. वीभत्स रस किसे कहते हैं? लिखिए।

उत्तर : घृणित वस्तुओं और भयावह दृश्यों को देखकर हृदय में सुप्त पड़ा जुगुप्सा का स्थायी भाव जाग्रत हो जाता है और मन घृणा से भर जाता है। यह स्थिति वीभत्स रस को उत्पन्न करती है।

5. भक्ति रस का स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर : भक्ति।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

हालदार साहब को यह सबकुछ बड़ा विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था। इन्हीं खयालों में खोए-खोए पान के पैसे चुकाकर, चश्मेवाले की देशभक्ति के समक्ष नतमस्तक होते हुए वह जीप की तरफ चले, फिर रूके, पीछे मुड़े और पान वाले के पास जाकर पूछा, क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है? या आजाद हिंद फौज का भूतपूर्व सिपाही?

पानवाला नया पान खा रहा था। पान पकड़े अपने हाथ को मुँह से डेढ़ इंच दूर रोककर उसने हालदार साहब को ध्यान से देखा, फिर अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाई और मुस्कुराकर बोला, नहीं साहब! वो लंगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फोटो-वोटो छपवा दो उसका कहीं।

1. हालदार साहब किसके समक्ष नतमस्तक हो गए? 2

उत्तर : हालदार साहब चश्मेवाले की देशभक्ति के समक्ष नतमस्तक हो गए।

2. पानवाले के पास जाकर हालदार साहब ने उससे क्या पूछा? 2

उत्तर : पानवाले के पास जाकर हालदार साहब ने उससे पूछा कि क्या चश्मेवाला नेताजी का साथी है अथवा वह आजाद हिंद फौज का भूतपूर्व सिपाही है?

3. पानवाले ने कैप्टन के बारे में कैसे शब्दों का प्रयोग किया?2

उत्तर : पानवाले ने कैप्टन के बारे में अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया। उसने कैप्टन को लँगड़ा और पागल करार दिया। उसने उपहास से कहा कि लंगड़ा फौज में कैसे जा सकता है।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. बालगोबिन भगत जी के गीतों की क्या विशेषता है?

उत्तर : बालगोबिन भगत कबीरदास को मानते थे। इसलिए उनके ही गीत गाते थे। कबीर के सीधे-सादे पद उनके कंठ से निकलकर मानो सजीव हो जाते थे। उनके कंठ से निकला एक-एक शब्द संगीत की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ मानो कुछ को

तो स्वर्ग की ओर भेज रहा हो। सभी के ऊपर इनका संगीत एक जादू–सा प्रतीत होता था। जो जिस काम में हो सब संगीत की मस्ती में डूब जाते थे।

2. **सुषिर वाद्यों** से क्या अभिप्राय है? शहनाई को **सुषिर वाद्यों में शाह** की उपाधि क्यों दी गई होगी?

उत्तर : **सुषिर वाद्यों** से अभिप्राय है फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य, जिनमें नाड़ी अर्थात् नरकट या रीड होती है। शहनाई को **शाहेनय** अर्थात् सुषिर वाद्यों के शाह की उपाधि दी गई है। सुषिर वाद्यों में शहनाई, मुरली, बंशी, शृंगी तथा मृदंग आदि आते हैं। इनमें शहनाई को मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला वाद्य माना गया है। इसी कारण इसे सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई है।

3. लेखिका मन्नू भण्डारी के पिता की आर्थिक स्थिति कमजोर क्यों हुई? गिरती आर्थिक स्थिति ने लेखिका के पिता पर कैसा प्रभाव डाला?

उत्तर : लेखिका मन्नू भण्डारी के पिता ने बहुत परिश्रम से एक ऐसा अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश तैयार किया जो अपनी तरह का पहला और अकेला था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी परन्तु इससे उन्हें धन की प्राप्ति नहीं हुई। इससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। इस कमजोर आर्थिक स्थिति ने उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया अर्थात् उनके जीवन में गुणों का लोप हो गया।

4. बालगोबिन भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस प्रकार व्यक्त कीं?

उत्तर : पुत्र की मृत्यु भी भगत के विचार से आनंद की बात थी क्योंकि उनका विश्वास था कि जब मनुष्य का जन्म होता है तो उसकी आत्मा को ईश्वर से अलग होकर इस संसार में लम्बे समय तक रहना पड़ता है तथा उसे अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। वे मानते थे कि पुत्र के बीमार होने पर उसकी आत्मा को बहुत कष्ट हो रहा था। वह बहुत दुखी था। आज मृत्योप–रान्त उसे अपने शरीर रूपी बंधन से मुक्ति मिल गई है। वह परमात्मा रूपी अपने प्रियतम के पास चला गया। यह बहुत खुशी की बात है।

5. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौनसा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर : जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् नहीं देखा था, तब तक उनके मानस पटल पर यह अंकित रहा होगा कि शायद वह आजाद हिंद फौज का भूतपूर्व सिपाही रहा होगा या नेता जी का साथी होने के कारण उनके देश के प्रति योगदान को भूल नहीं पाया होगा। हालदार साहब की नजर में वह एक रोबीला तथा दबंग व्यक्ति रहा होगा।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उँगलियाँ माँ की कराती रहीं है मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होतीं जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान!

1. कवि ने स्वयं को चिरप्रवासी कहकर क्या–क्या व्यक्त किया है? 2

उत्तर : कवि ने स्वयं को चिरप्रवासी कहकर व्यक्त किया है कि वे सन्यासी हो गए थे। हमेशा घर से बाहर रहे। घर की प्रगति में उन्होंने सहयोग नहीं दिया। पुत्र के पालन–पोषण में भी उन्होंने अपनी पत्नी का हाथ नहीं बटाया। बच्चे का पालन–पोषण उसकी माँ ने अकेले ही किया है।

2. काव्यांश में मधुपर्क से क्या अभिप्राय है? 2

उत्तर : मधुपर्क का अर्थ होता है– दही, घी, शहद, जल और दूध के मिश्रण से बना पंचामृत, जो पूजा के समय भगवान को भोग लगाने के बाद अतिथियों एवं भक्तों को बाँटा जाता है। यहाँ इसका अभिप्राय पुत्र को दिए गए माँ के प्रेम और दुलार से है।

3. बच्चा कवि को कैसे देख रहा था और क्यों? 2

उत्तर : बच्चा कवि को कनखी मार कर देख रहा था अर्थात् तिरछी निगाहों से देख रहा था क्योंकि वह जानना चाहता है कि ये अतिथि महोदय कौन है? पहले तो उन्हें कभी देखा नहीं।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. गोपियों ने योग साधना को अपने लिए किस तरह अनुपयुक्त बताया?

उत्तर : गोपियाँ अपने को कृष्ण के प्रेम में सराबोर कहती हैं। उनके मन में कृष्ण का प्रेम समाया है। अतः वे योग विद्या नहीं समझ पाएँगी।

2. कन्यादान कविता में माँ ने बेटी को लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना, सीख क्यों दी?

उत्तर : कविता में माँ ने बेटी से कहा है कि लड़की होने में कुछ भी बुराई नही है परन्तु तुम लड़की जैसी दीन–हीन, असहाय, अबला बनकर मत रहना। तुम्हारे दुर्बल रूप को देखकर लोग तुम्हारे ऊपर अत्याचार करने से नहीं चूकेंगे।

3. रस बसंत बीत जाने पर फूल खिलने से कवि का क्या आशय है? छाया मत छूना कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : रस बसंत बीत जाने पर यानी सुअवसर बीत जाने पर फूल खिलने से कवि संकेत करता है कि समय निकल जाने पर वांछित वस्तु के प्राप्त होने से कोई लाभ नहीं होता।

जैसे यौवनावस्था में सुख, वैभव और प्रिय का साथ न मिले, वृद्धावस्था में इनकी प्राप्ति हो तो आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती।

4. फसल को हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहते हैं?

उत्तर : मनुष्य का कठोर श्रम ही अनाज की भरपूर पैदावार में सहायक बनता है। मिट्टी और पानी की पोषकता तथा सूर्य की ऊर्जा भी तभी सार्थक होती है, जब मनुष्य लगन के साथ कड़ी मेहनत करता है। मनुष्य के श्रम करते हाथ ही उसे गरिमामय और महिमामय बनाते हैं क्योंकि फसल से ही धनी-निर्धन सबका पेट भरता है। आज के युग को भले ही मशीनी युग कहा जाता है परन्तु आज भी हमारे किसान अपने शारीरिक श्रम से फसलों का उत्पादन करते हैं।

5. लक्ष्मण ने किस पर और क्यों व्यंग्य किया?

उत्तर : लक्ष्मण ने परशुराम पर व्यंग्य किया क्योंकि परशुराम अपने को महान योद्धा समझ रहे थे इसलिए अपना फरसा बार-बार दिखा रहे थे। ऐसा लगता है था कि फूँक मारकर पहाड़ उड़ा देंगे। लक्ष्मण ने कहा कि मैं कोई कुम्हेड़े की बतिया अर्थात् छोटा फल नहीं हूँ जो तर्जनी देखते ही मर जाऊँगा। वहाँ कोई कुम्हड़ बतिया नहीं था। राम-लक्ष्मण को मारना आसान नहीं था।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए- $3 \times 2 = 6$

1. रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे?

उत्तर : रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का कारण स्थिति के अनुकूल उनकी बनाई जाने वाली पोशाकें थीं। वह यह नहीं समझ पा रहा था कि उनके हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे के लिए कैसी पोशाकें बनाए कि रानी प्रसन्न हो जाए। उसने रानी के हिन्दुस्तान के दौरे के लिए हिन्दुस्तान से नीले रंग का रेशमी कपड़ा मँगवाकर सूट बनाया था। फिर भी रानी का दर्जी होने के कारण उसका समाज में सम्मान था। उसे अच्छा धन भी प्राप्त होता था। वह उस देश का नागरिक भी था। अतः सम्मान, धन और कर्तव्य को देखते हुए हमें उसकी चिंता तर्कसंगत लगती है।

2. **माता का अँचल**, पाठ की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत कहानी में लेखक यद्यपि अपने पिता के वात्सल्य से अधिक जुड़ा दिखाई देता है फिर भी माँ उसे खिलाने-पिलाने और कपड़े पहनाकर तैयार करने का काम करती थी। लेखक पर जब कोई विपत्ति स्वरूप डर हावी होता, तो उसे माँ के अँचल की छाँव में ही सर्वाधिक सुरक्षा और शांति मिलती। वह पिता के बुलाए जाने पर भी उनकी गोद में नहीं जाता। इस तरह पुत्र को जन्म देने वाली माँ की ममता को लेखक पिता के वात्सल्य से श्रेष्ठ सिद्ध करता है। इसलिए प्रस्तुत कहानी का शीर्षक माता का अँचल उपयुक्त सिद्ध होता है। इस कहानी का एक अन्य उपयुक्त शीर्षक **माँ की ममता** भी हो सकता है।

3. पहाड़ी इलाके के बच्चों की तकलीफें कम करने के लिए किस तरह के प्रयासों की आवश्यकता है? अपना सुझाव दीजिए।

उत्तर : पहाड़ी इलाकों के बच्चों को पढ़ने-लिखने की वे सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होती जो कि मैदानी इलाकों में रहने वाले बच्चों को उपलब्ध होती हैं। पहाड़ी इलाकों के विद्यालय दुर्गम स्थानों में होते हैं जहाँ पहुँचना ही एक कठिन समस्या होती है। घर से विद्यालय तक के मार्ग को सुगम बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। बच्चों को बस या अन्य साधनों द्वारा स्कूल तक पहुँचाने की व्यवस्था विद्यालय प्रशासन या सरकार के द्वारा की जानी चाहिए। घरेलू मोर्चे पर भी बच्चों की मदद की जानी चाहिए। बच्चों के परिवार के कमाऊ सदस्यों की आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि उन्हें अपने कार्यों में पढ़ने-लिखने वाले बच्चों के श्रम का इस्तेमाल नहीं करना पड़े।

खण्ड-घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(1) पर्वतीय सौंदर्य

संकेत बिंदु : भूमिका ✲ मानव प्रेम ✲ संरक्षण के प्रति जनता का कर्तव्य ✲ मानव के चहुँमुखी विकास में सहायक ✲ उपसंहार।

(2) समय का सदुपयोग

संकेत : भूमिका-समय क्या है ✲ समय का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए ✲ समय का सुदपयोग न करने से क्या होता है।

(3) उपभोक्तावाद का जीवन पर प्रभाव

संकेत : भूमिका ✲ उपभोक्तावादी संस्कृति का दुष्प्रभाव ✲ नैतिक मूल्यों का ह्रास ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) पर्वतीय सौंदर्य

संकेत बिंदु : भूमिका ✲ मानव प्रेम ✲ संरक्षण के प्रति जनता का कर्तव्य ✲ मानव के चहुँमुखी विकास में सहायक ✲ उपसंहार।

भूमिका- पर्वतीय क्षेत्रों की अनुपम सुषमा और अद्भुत सौंदर्य मानव-मन को लुभाते आए हैं। ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखरों और घाटियों मे फल-फूलों से लदे पेड़-पौधे, लताएँ और अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ, पहाड़ों से झर-झर, झरते-झरने, कलवर करते वन्य पक्षी, वादियों में गूँजते पहाड़ी गीत किसका मन नहीं मोह लेंगे। ऐसी प्राकृति सुषमा को कवि स्वर्ग से भी सुंदर बताते हैं।

मानव प्रेम- पहाड़ों का वातावरण जितना सुंदर और मोहक है उतना ही मोहक है यहाँ के निवासियों का सादा जीवन और

भोलापन। पहाड़ी लोग शांत, साहसी और कठिन परिश्रमी होते हैं किन्तु पर्याप्त साधनों के अभाव में यहाँ जीवन गरीबी और अभावों में पलता है। पहाड़ों में वन संपदा के साथ–साथ अपार खनिज संपदा और जल संपदा भी है। पहाड़ी वनों की मजबूत लकड़ी जहाँ बहुत कीमती होती है, वहीं यहाँ मिलने वाले औषधीय पौधे बहुमूल्य होते हैं। इसके अतिरिक्त पहाड़ी पौधे हमें भाँति–भाँति के फल और सूखे मेवे भी देते हैं।

संरक्षण के प्रति जनता का कर्तव्य– पहाड़ी क्षेत्रों में वन संपदा के अतिरिक्त अनेक प्रकार की खनिज संपदा भी भरी पड़ी है। पहाड़ों की मिट्टी और पत्थरों में अनेक जीवनोपयोगी खनिज भारी मात्रा में उपलब्ध हैं। इसके साथ ही पर्वतों पर जमी स्वच्छ बर्फ पिघल कर दुनियाभर के लोगों को नदियों के रूप में पानी पिलाती है। पशुओं की रक्षा करती है और खाद्यान्न भी उपजाती है।

मानव के चहुँमुखी विकास में सहायक– खेद का विषय यह है कि अनेक प्रकार की अकूट सम्पदा से परिपूर्ण पर्वतीय क्षेत्रों में वन, जल और खनिज संपदा का न तो हम पर्याप्त संरक्षण कर पा रहे हैं और न ही इससे लाभ ले पा रहे हैं। पर्वतीय संपदा के संरक्षण से न केवल पर्वतीय क्षेत्रों का विकास होगा, अपितु पूरी मानव जाति का इससे चहुँमुखी विकास होगा।

उपसंहार– इसलिए हमें पर्वतीय क्षेत्रों का संरक्षण और बहुमुखी विकास करने हेतु क्रमबद्ध कार्य करने चाहिए जिससे इस सौंदर्य की रक्षा हो सके और मानव जाति को समृद्ध बनाया जा सके।

(2) समय का सदुपयोग

संकेत : भूमिका–समय क्या है ✻ समय का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए ✻ समय का सुदपयोग न करने से क्या होता है।

भूमिका–समय क्या है– समय निरंतर गतिशील है। समय का चक्र लगातार घूमता रहता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। जीवन का प्रत्येक क्षण अमूल्य है। यदि एक क्षण का दुरूपयोग किया जाता है तो मानव को पछताना पड़ता है। अतः समय का सदुपयोग करना आवश्यक है।

समय का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए– समय और मानव जीवन प्रकृति की अमूल्य निधि हैं। दोनों का तालमेल होना आवश्यक है। जो व्यक्ति समय पर कार्य करता है उसके सभी काम ठीक समय पर पूरे होते हैं और इससे उसे तनाव नहीं रहता। समय के साथ चलने वाला मनुष्य पश्चाताप की अग्नि में कभी नहीं जलता। सफलता, यश, सम्मान उसके कदम चूमते हैं। इसलिए संत कबीर ने मनुष्य को सचेत करते हुए कहा है–

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करैगो कब्ब।।

हर काम के लिए एक समय और हर समय के लिए एक काम निर्धारित होता है। किसी भी कार्य को असमय पर नहीं करना चाहिए। प्रत्येक कार्य को समय पर ही करने से लाभ होता है। रोगी को दवा समय पर न मिलने पर उसका इलाज नहीं हो पाता। एक मिनट के विलम्ब से पहुँचने पर स्टेशन से गाड़ी छूट जाती है।

समय का सदुपयोग न करने से क्या होता है– विद्यार्थी जीवन में समय का और भी महत्व होता है। जो विद्यार्थी समय को फैशन, आमोद–प्रमोद में गँवा देता है अथवा आलस्य करता है उसे जीवनभर पछताना पड़ता है। विद्यार्थी जीवन में प्राप्त की हुई विद्या एवं योग्यता पर ही भावी जीवन रूपी भवन खड़ा होता है। अतः इसका सदुपयोग करना प्रत्येक विद्यार्थी का परम कर्तव्य है।

हमें समय का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए। जो समय को खाली बैठकर व्यर्थ नष्ट करता है समय उसे नष्ट कर देता है। अतः हमें समय का सदुपयोग कर राष्ट्र, समाज, परिवार और स्वयं की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

(3) उपभोक्तावाद का जीवन पर प्रभाव

संकेत : भूमिका ✻ उपभोक्तावादी संस्कृति का दुष्प्रभाव ✻ नैतिक मूल्यों का ह्रास ✻ उपसंहार

भूमिका– आज वैज्ञानिक उन्नति की बदौलत हमारी जीवन शैली में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। नित्य नई वस्तुएँ अधिकाधिक मात्रा में हमारे सामने आ रहीं हैं। बाजार में भोग–विलास की विभिन्न सामग्री की बहुलता है जिनसे विज्ञापन और अधिक मोहक बनाए जा रहे हैं। आज जन–समुदाय उन्हीं चीजों को अपनाने के लिए भरपूर प्रयास करता है जिन्हें विज्ञापन का स्पर्श मिला है।

उपभोक्तावादी संस्कृति का दुष्प्रभाव– चाहे खाद्य सामग्री हो या दैनिक उपयोग की वस्तुएँ हों, चाहे कपड़े हों या प्रसाधन सामग्री चाहे कुछ भी हो, सबके साथ फिल्मी सितारों की मनमोहक अदाएँ जोड़कर विज्ञापन हमारा ध्यान खींच रहा है। बड़े तो बड़े छोटे–छोटे बच्चे भी आज खाने–पीने, पहनने–ओढ़ने के मामले में फिल्मी सितारों का अंधा अनुकरण कर रहे हें। इस प्रकार हम सब अपनी आवश्यकताओं के दायरे को खींच–खींचकर बढ़ाते जा रहे हैं, मानो उनके बिना हम जी नहीं सकते। महँगी से महँगी वस्तुओं को दिखाने के लिए खरीदते जा रहे हैं और अपने धन का दुरूपयोग कर रहे हैं। आजकल लोग आवश्यकता के लिए नहीं बल्कि दिखावे के लिए कपड़े, जूते, खिलौने, मोबाइल फोन, म्यूजिक सिस्टम, कम्प्यूटर, मोटर साइकिल, कार तथा प्रसाधन सामग्री खरीदते हैं।

नैतिक मूल्यों का ह्रास– आजकल जगह–जगह जिम, ब्यूटी पार्लर, डिजाइनर वस्त्रों के लिए बुटीक एवं मॉल्स खुल गए हैं। पाँच सितारा स्कूल और अस्पताल खुल गए हैं। इस प्रकार उपभोक्तावादी संस्कृति को अपनाकर हम अपने को व्यक्तिकेन्द्रित बनाते जा रहे हैं। जो लोग हमारी तरह खर्च नहीं कर सकते, उनसे हम दूरी बढ़ा रहे हैं, साथ ही वे भी हमारे साथ संबंध बनाए रखकर अपने को हीन दर्शाना नहीं चाहते। इस तरह हमारे सामाजिक संबंध बिगड़ रहे हैं। अतः उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हमारी नैतिकता और मर्यादा का अवमूल्यन हो रहा है।

उपसंहार– आपस में दूरियाँ बढ़ने के साथ ही आक्रोश, अशांति, ईर्ष्या तथा प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। हमारे सादा जीवन और उच्च विचार की अवधारणा आज पूरी तरह से लुप्त हो गई है और हमारा जीवन जटिलताओं से भर गया है।

12. अर्द्धवार्षिक परीक्षा में अपने भाई के उत्तीर्ण होने पर उसे बधाई देते हुए तथा अगली बोर्ड कक्षा के लिए योजनाबद्ध ढंग से तैयारी की सलाह देते हुए एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

सरस्वती छात्रावास
नेहरू पब्लिक स्कूल,
राजस्थान।
दिनांक : 28.10.2018
प्रिय भाई रमेश,
सस्नेह आशीर्वाद।

तुम्हारा पत्र मुझे कल ही प्राप्त हुआ। पता चला कि तुमने नवीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अनुज, हम अपनी मेहनत और बड़ों के आशीर्वाद से सफलता प्राप्त करते चले जाते हैं। तुम्हें हमारी तरफ से इस सफलता पर हार्दिक बधाई। अगले वर्ष तुम्हारी दसवीं की परीक्षा है। आशा है कि उसमें भी तुम इसी प्रकार सफलता प्राप्त करोगे लेकिन इसके लिए परिश्रम के साथ योजना बनाकर अध्ययन करना होगा। समय सारणी बनाकर कार्य करना, प्रातःकाल व्यायाम, शुद्ध और उचित मात्रा में भोजन आदि का ध्यान रखना होगा। शिक्षकों के संपर्क में रहकर अपनी कमियों एवं न जानने वाले तथ्यों को सीखना होगा, तभी तुम वार्षिक परीक्षा में अव्वल आ सकोगे।

हमारी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं, ईश्वर करे तुम्हारा नाम सूर्य के समान रोशन हो। माताजी–पिताजी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

तुम्हारा बड़ा भाई
कमलेश

अथवा

परिवहन निगम के प्रबंधक को कुछ दिन पहले हुई बस दुर्घटना का विवरण देते हुए एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। जिसमें चालक की दिलेरी, कर्तव्यनिष्ठा और सूझबूझ की प्रशंसा की गई हो।

उत्तर :

सेवा में,
परिवहन निगम,
महात्मा गाँधी मार्ग,
नई दिल्ली–110002
दिनांक : 24 नवम्बर, 2018
महोदय,

गत सप्ताह शक्ति नगर चौराहे पर जो दुर्घटना हुई थी, उसमें बस चालक नहीं, अपितु कार चालक का दोष था। रेड लाइट होने पर भी वह कार को भगा ले जा रहा था। यह तो बस चालक ने तुरन्त ब्रेक लगा लिये जिससे कार एक साइड से ही बस से टकराई और कोई जान–माल का नुकसान नहीं हुआ। हाँ कार में अगली सीट पर बैठे कार चालक को चोटें अवश्य आईं।

यदि बस चालक सूझबूझ से काम न लेता तो बस कार के ऊपर होती और फिर पता नहीं कितनी बड़ी दुर्घटना बन जाती। हम बस चालक की सूझ–बूझ, कर्तव्यनिष्ठा और दिलेरी की प्रशंसा करते हैं। वे सचमुच बधाई और सम्मान के पात्र हैं।

भवदीय
रमा शर्मा
29–सी–ए,
न्यू गुप्ता कॉलोनी,
दिल्ली–110009

13. नीचे दिये गए स्थान में किसी विद्यालय की उपलब्धियों संबंधी एक आकर्षक विज्ञापन 25–50 शब्दो में लिखिए 5

उत्तर :

शिक्षा का मंदिर, उन्नति का द्वार
जहाँ होते हैं सपने साकार

बिरला शिक्षा निकेतन

- सी.बी.एस.ई. में 80% बच्चों के 92% से अधिक अंक
- क्रिकेट में राष्ट्रीय ट्रॉफ़ी विजेता
- क्विज़ में बोर्नवीटा प्रश्नोत्तरी विजेता
- भारतीय सेना में प्रतिवर्ष तीन से पाँच बच्चों का चयन

अपने बच्चों के सपने साकार करवाएँ।
बाल शिक्षा निकेतन में दाखिला दिलाएँ।।

अथवा

आपने अपने शहर में इंटीरियर डेकोरेशन पोइंट खोला है। उसके प्रचार के लिए 25–50 शब्दों का एक विज्ञापन लिखिए।

उत्तर :

नेशनल इंटीरियर डेकोरेशन पॉइंट

घर-द्वार प्राकृतिक ढंग से सजाने हों या ऑफ़िस की खूबसूरती में चार चाँद लगाने हों। तो .....
एक बार ज़रूर मिलें

नेशनल इंटीरियर डेकोरेशन पॉइंट, कालका गढ़ी, चण्डीगढ़–03